एम ए - II- Sem पेपर - 10 **पेपर - 6**

B.A - III काव्य - हेतु

हेतु का अर्थ है - कारण। कारण - हेतु का सामान्य अर्थ है - काव्य का कारण। वे कौन से कारणभूत हैं जो काव्य - रचना के हेतु हैं। जन्म से ही कोई कवि पैदा नहीं होता है। कोई भी आदमी प्रयत्न तथा निरन्तर अभ्यास द्वारा कवि बन सकता है,

प्रतिभा कवि के लिए आवश्यक है किन्तु काव्य के संस्कार ही न हों, कविता की प्रकृति से ही परिचय न हो, शब्दों का ज्ञान ही न हो तो प्रतिभा द्वारा काव्य सृजन कैसे सम्भव होगा? कभी - कभी कम प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति अभ्यास करते - करते सुंदर रचना कर बैठता है, जबकि अभ्यास के अभाव में अनेक प्रतिभाएँ कुंठित होती हुई दिखायी पड़ती हैं।

भामह -> आचार्य भामह ने काव्य रचना में प्रतिभा की प्रधानता स्वीकार की है। अध्ययन द्वारा एक मूर्ख पंडित तो बन सकता है किन्तु कवि नहीं। काव्य रचना तो प्रतिभा द्वारा ही सम्भव है।

दण्डी -> आचार्य दण्डी ने 'काव्यादर्श' में काव्य के तीन हेतुओं की ओर संकेत किया है। ये तीन काव्य के हेतु निम्नलिखित हैं ->

(1) नैसर्गिक प्रतिभा (2) शास्त्रों का ज्ञान और (3) सतत अभ्यास। इन तीनों हेतुओं के सामंजस्य से उत्तम काव्य रचना सुनिश्चित होती है।

आचार्य वामन के अनुसार शक्ति के बिना काव्य सृजन सम्भव नहीं है। शक्ति के बिना सृजित काव्य उपहास मात्र होगा। अतः प्रतिभा ही कवित्व का कारण है।

आचार्य मम्मट ने 'काव्य- प्रकाश' में काव्य हेतुओं पर प्रकाश डाला है।

मम्मट ने शक्ति, निपुणता, लोकशास्त्र ज्ञान, कवि शिक्षा तथा अभ्यास को काव्य का हेतु माना है। इन हेतुओं में मम्मट के अनुसार काव्य के प्रमुख हेतु तीन हैं ___

(1) शक्ति -> अर्थात् प्रतिभा जो जन्मजात होती है।

(2) निपुणता -> अर्थात् काव्यकौशल जो लोक और शास्त्र तथा काव्य के अनुशीलन से प्राप्त है।

(3) अभ्यास -> अर्थात् गुरु की शिक्षा के अनुसार काव्य रचना का सतत अभ्यास।

राजशेखर के काव्य-हेतु सम्बन्धी विचार → 'काव्यमीमांसा' के रचयिता राजशेखर ने केवल दो शीर्षकों में सभी काव्य-हेतुओं का समावेश कर दिया है → (1) शक्ति और (2) प्रतिभा।

शक्ति कर्तृरूप है और प्रतिभा तथा व्युत्पत्ति कर्मरूप। जिसमें प्रतिभा नहीं है, उसके लिए प्रत्यक्ष दीखते हुए भी अनेक पदार्थ परोक्ष मालूम होते हैं।

राजशेखर ने प्रतिभा के भी दो भेद किये हैं—

(1) भावयित्री प्रतिभा → काव्य के भावन या आस्वादन की प्रतिभा को भावयित्री प्रतिभा कहते हैं।

(2) कारयित्री प्रतिभा → काव्य-रचना की प्रतिभा कारयित्री प्रतिभा कहलाती है।

आनन्दवर्धन, वाग्भट, हेमचन्द्र, जयदेव तथा पण्डितराज जगन्नाथ आदि अनेक आचार्यों ने प्रतिभा की श्रेष्ठता स्वीकार की है।